राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

आध्यात्मिकी यदा शिक्षा, प्रतिव्यक्ति न दीयताम् ।
सदाचारस्तदा तस्यां, कथमुत्पाद्यतां ? वद ॥७३॥

जब प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्मिक शिक्षा नहीं दी जाय तो फिर उसमें सदाचार कैसे पैदा किया जाय ? बोलो ।

How will one learn proper/good behaviour if aspiritual education is not given to everybody? Do say!

आन्दोलनं विना नाद्य, कार्यं सिद्ध्यति किञ्चन ।
तदेव शरणं तस्माद्, शान्तानामपि हन्त हा ! ॥७४॥

आज कोई भी कार्य आन्दोलन के बिना सिद्ध नहीं होता है, अतः खेद है, शान्त स्वभाव के व्यक्तियों को भी आन्दोलन की शरण लेनी पड़ती है ।

Today, nothing can be achieved without agitation. Therefore, it is said that even peaceful people must use agitation/movement.

आन्दोलनेषु राष्ट्रस्य, शक्तिर्न क्षीयतां यथा ।
तथा सर्वैस्तु सम्मिल्य, समाधेयं मिथो द्रुतम् ॥७५॥

आन्दोलनों में राष्ट्र की शक्ति जिस प्रकार क्षीण न हो, उस प्रकार का समाधान सबको आपस में मिलकर अविलम्ब शीघ्र ही कर लेना चाहिये ।

The people should meet and quickly find a way to hold an agitation that does not affect the strength of the nation.